आसाराम: अन्यायी व्यवस्था का एक बगुला भगत

सतनाम

पूंजीवादी व्यवस्था तो बाबाओं को प्रोत्साहन देकर समाज में अंधविश्वास पैदा करती है, ताकि लोग अंधविश्वासी होकर उसके शासन द्वारा किये जा रहे शोषण-उत्पीड़न को प्रभु की इच्छा, कर्मों का फल मानकर रामनाम जपते रहे, योग करते रहे।

आसाराम इन दिनों जेल की हवा खा रहा है। हाईकोर्ट द्वारा भी उसकी जमानत याचिका खारिज कर दी गयी है। शाहजहांपुर की एक नाबालिग किशोरी और उसके परिवार ने हिम्मत करके जब आसाराम के खिलाफ़ मोर्चा खोला तो और लोग़ों का भी साहस बन गया कि वे भी आसाराम द्वारा किये कुकर्मों को सामने लाएं। एक के बाद दूसरा मामला खुलता ही जा रहा है। कुछ वर्ष पूर्व इंडिया टी.वी. ने टेप जारी कर बताया था कि आसाराम व उसका पुत्र नारायण सांई आश्रम की महिलाओं का यौन शोषण करते हैं। अलग-अलग शहरों-कस्बों से पीड़ित लोग आसाराम के कुकर्मों का खुलासा कर रहे हैं। इन खुलासों से सिद्ध हो रहा है कि कल तक शासक वर्ग की गोद में बैठे आसाराम यौन विकृति का शिकार है। छोटे बच्चों तक को यह नहीं बख्शता। आसाराम का बेटा भी इन्हीं अपराधों में जेल में बंद है।

आसाराम पर इस तरह के आरोप पहले भी लगते रहे हैं। इसके अतिरिक्त ज़मीन कब्जाने, पैसे के हेर-फेर के भी कई मामले चल रहे हैं। कुल मिलाकर देश में आसाराम के आश्रम से जुड़े 147 मामले अदालतों में चल रहे हैं। यौन शोषण की ओर इशारा करने वाले मामले पहले भी उठते रहे किंतु आसाराम की ऊंची पहुंच व धन-बल के कारण यह सारे मामले ठंडे बस्ते में आज तक पड़े रहे।

गुजरात में अहमदाबाद स्थित उसके आश्रम के दो बच्चों की लाशें साबरमती नदी में पायी गयीं। मध्यप्रदेश छिंदवाड़ा में पहले नर्सरी में पढने वाले बच्चे और उसके कुछ ही दिन बाद केजी में पढ़ने वाले बच्चे की लाशें बाथरूम में मिली। यह तो उन बच्चों की लाशें हैं जो किसी तरह से सामने आ गयीं। ना जाने कितने बच्चे यहां से लापता हो गये होंगे। आज ऐसा सोचना कोई गलत न होगा।

गुजरात में बच्चों की लाशें मिलने के बाद से ही परिजन, समाजसेवी, पत्रकार आसाराम के खिलाफ़ संघर्षरत हैं। आसाराम के रसूख का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इतने संवेदनशील मामले व विरोध के बावजूद एक सप्ताह तक पुलिस द्वारा प्राथमिकी तक दर्ज नहीं की गयी। संघर्ष तेज होने के बाद जाकर ही प्राथमिकी दर्ज की गयी। संघर्ष को तेज करने के लिए 'जागेगा गुजरात संघर्ष समिति' बनायी गयी। समिति द्वारा बड़ी संख्या में आश्रम में प्रदर्शन आयोजित किये गये। जिस तरह की गुण्डागर्दी इस बार आसाराम की गिरफ़्तारी के समय इनके चेले-चपाटों ने की, उसी तरह की गुण्डागर्दी 'संस्कारी' पुरुष आसाराम के 'संस्कारी' चेलों द्वारा उस समय समिति के प्रदर्शन पर की गयी। पत्रकारों के कैमरे तोड़ दिये गये। इस मारपीट में कई प्रदर्शनकारी घायल हो गये। इसके बाद मृत बच्चे के पिता आमरण अनशन पर बैठ गये। नरेन्द्र मोदी के आश्वासन पर अनशन समाप्त कर उच्च स्तरीय जांच करवायी गयी। आसाराम पर मुकदमा दर्ज व जांच करवाने के लिये यहां लोगों को ना सिर्फ आसाराम के गुंडों से भिड़ना पड़ा बल्कि उसकी पहुंच व रसूख से भी दो-दो हाथ करने पड़े थे।

यौन शोषण के अतिरिक्त भी आसाराम व उसके आश्रम पर कई अन्य किस्म के मामले भी दर्ज हैं जिसमें जालसाज़ी, गलत तरीके से हथियायी गयी भूमि व कई आपराधिक मामले भी दर्ज हैं आश्रम के पास अथाह संपत्ति इकट्ठा होने पर संपत्ति को लेकर चेलों का विद्रोह स्वाभाविक ही है। यह समय-समय पर फूटता रहा और हर विद्रोह के बाद आसाराम के चेहरे का नकाब सरकता रहा। महेन्द्र चावला, राजू चंडक ऐसे ही नाम हैं। राजू चंडक ने तो 100 पेजों की सामग्री इंटरनेट पर डाल दी, जिससे आसाराम का बड़ा फजीता हुआ। बाबा क्रोधित हो गये और दंड स्वरूप 'पापी' राजू चंडक को मार डालने पर उतारू हो गये। किंतु इसमें यह 'देव दूत' असफल रहे। राजू चंडक मात्र घायल ही हो पाया। उसने थाने में नामजद रिपोर्ट दर्ज करवा दी। आसाराम की फैक्टरी जिसमें तेल, आयुर्वेदिक दवाएं, किताबें बनती हैं। वहां नाबालिग बच्चों से 16 से 20 घंटे काम करवाकर उनका शोषण किया जाता है। यह आवाज कभी उठ ही नहीं पायी है।

इतने कुकर्मी पुरुष के साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ व भाजपा निर्लज्जता से खड़ी हैं। आसाराम की गिरफ़्तारी के विरोध में उमा भारती खुलकर आयी, अशोक सिंघल ने इसे राजनीतिक षड्यंत्र कह आसारम को निर्दोष करार दिया। दिल्ली गैंग रेप व मुम्बई गैंग रेप पर लोटे भर-भर आंसू बहाकर फांसी की मांग करने वाली सुषमा स्वराज को तो सांप ही सूंघ गया। वह अब फांसी की मांग नहीं कर रही है। इंदौर का विधायक जो कि भाजपा का है, ने आसाराम के समर्थन में जुलूस निकाल नारेबाजी ही कर डाली। भाजपा, आरएसएस आसाराम से अपनी पुरानी दोस्ती भी निभा रहे हैं। गुजरात कत्लेआम में आसाराम की 'योग-वेदांत सेवा समिति' द्वारा बढ़-चढ़ कर भागीदारी करने व आसाराम के चेले-चपाटों में विहिप व बजरंग दल के लोग़ों के होने की बात समय-समय पर उठती रही है। आसाराम के दरबार में कई बार वाजपेयी, आडवाणी नतमस्तक पाये गये। वाजपेयी, आडवाणी, नरेन्द्र मोदी और आरएसएस से आसाराम की करीबी ही उसे कुकर्म करके भी लगातार बचाती रही। आसाराम का भाजपा से गहरा सम्बन्ध इस तथ्य से भी उजागर हो जाता है कि जहां-जहां भाजपा की सरकार ज़्यादा बनती या नियमित रही, वहां-वहां आसाराम का साम्राज्य ज़्यादा मजबूत हुआ है। जैसे गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश। हालांकि कांग्रेसी भी कम मेहरबान नहीं रहे है। कांग्रेस महासचिव दिग्विजय सिंह अब जब आसाराम के कुकर्म सामने आ गये तब आसाराम को मुफ़्त जमीन देने की गलती मान रहे हैं।

ऐसा नहीं है कि आरएसएस, भाजपा के आसाराम से कोई निजी सम्बन्ध है। यदि हैं भी तो वो मुख्य नहीं हैं। आरएसएस की हिन्दुत्व की विचारधारा कूपमंडूक विचारों के प्रचार, हिंदू संस्कृति का झूठा गौरव गान; इसके विचारों को समाज में प्रसारित ही करता है। इसलिए संघ संतों, ढोंगी, पाखंडियों को अपने करीब रखता है।

ऐसा कहना है कि संघ भाजपा अंधविश्वास को बढावा देते हैं, यह बात अर्ध सत्य होगी। कांग्रेस सहित तमाम पार्टियों के नेताओं को इन पाखंडियों के चरणों में लोट-पोट होते हम अक्सर टीवी व समाचार पत्रों में देख सकते हैं। इंदिरागांधी व तमाम नेताओं का गुरु एक पाखंडी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी था। स्वामी प्रेमानंद ने, जिसकी पहुंच राजनीति में अच्छी खासी थी, यौन शोषण, बलात्कार के आरोप में जेल की हवा खायी। पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव व चन्द्रशेखर के तांत्रिक गुरु चन्द्र स्वामी हथियारों की तस्करी में जेल गये। सत्य श्री सांई बाबा के चमत्कारों की पोल खुल जाने व उनके अपने ही आश्रम के लोग़ों के साथ समलैंगिक सम्बंधों से उजाग़र होने के बावजूद नेता, अभिनेता उद्योगपति उनके दरबार में शीश नवाते रहे। श्री-श्री रविशंकर का भी कारोबार जोर-शोर से चल रहा है। यहां भी मत्था टेकने वालों का तांता लगा रहता है। कांग्रेस पार्टी ने कई आंदोलनों में वार्ता के लिए श्री-श्री रविशंकर को ही मध्यस्थ बनाकर मामला निपटाया है।

समाज में इन ढोंगी-पाखंडी बाबाओं को स्वीकार्यता देने की मुख्य जिम्मेदार यह पूंजीवादी व्यवस्था है। यह मध्यम वर्ग, निम्न मध्यम वर्ग के जीवन को असुरक्षा, अनिश्चितता से भर देती है। इस अनिश्चितता का हल वह ऐसे ढोंगी-पाखंडियों में देखते हैं। यह इसके राज करने में भी सुविधा पैदा करती है। मध्य वर्ग एक के बाद दूसरे बाबा से ठगे जाने को आतुर है। हो सकता है, जैसा कि कई बार हुआ है, आसाराम जेल से छूटने के बाद अपनी दुकान दुबारा से सजाएं, कुछ चमत्कार करें, मीडिया इन चमत्कारों को प्रचारित करे और मध्यम वर्ग फिर से बाबा आसाराम की जय-जयकार शुरू कर दे। अगर ऐसा होता है तो आश्चर्य की बात नहीं होगी।

पूंजीवादी व्यवस्था तो बाबाओं को प्रोत्साहन देकर समाज में अंधविश्वास पैदा करती है, ताकि लोग अंधविश्वासी होकर उसके शासन द्वारा किये जा रहे शोषण-उत्पीड़न को प्रभु की इच्छा, कर्मों का फल मानकर रामनाम जपते रहे, योग करते रहे। दूसरी ओर पूंजीपति, राजनेता, अफसर बाबाओं को बड़ा-बड़ा दान देकर अपने काले धन को सफेद करते रहें। फ़िर इस धन को मज़दूरों-मेहनतकशों के शोषण-उत्पीड़न में लगा दें

आसाराम, रामदेव, श्री श्री रविशंकर विभिन्न शरंकराचार्यों जैसे बड़े-बड़े धर्माधीश पूंजीवादी व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं अपनी हैसियत में यह लोग खुद भी पूंजीपति हैं। जिस प्रकार पुलिस, फौज गोली चलाकर पूंजीपति की रक्षा करती है, उसी प्रकार यह बाबा लोग बोली सुनाकर पूंजीवाद के किले को मजबूत करते हैं। कुल जमा यह भी पूंजीवादी थैली के ही चट्टे-बट्टे हैं। इसलिए इनका व्यक्तिगत जीवन का व्यवहार भी पूंजीपतियों जैसा ही अय्याशी-लंपटाई भरा है। इनके खिलाफ़ लड़ाई पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ़ लड़ाई से जुड़ी है। पूंजीवाद से मुक्ति में ही इन ढोंगियों से भी मुक्ति मिलेगी। ■

टोल खोल रहा 'हुड्डा' के विकास की पोल

म.मो. (रोहतक)। नये बने रोहतक-पानीपत और रोहतक-झज्जर-रिवाड़ी राष्ट्रीय राजमार्गों के चालू होते ही विकास का ढोल पीटनेवाले मुख्यमंत्री हुड्डा के दावों की पोल खुलनी शुरू हो गई है। इन मार्गों पर वसूले जा रहे टोल टैक्स ने लोग़ों की हालत खराब कर दी है। जहां रोहतक से झज्जर का टोल टैक्स पच्चीस रुपये है वहीं रोहतक से पानीपत जाने के लिये एक कार से एक तरफ के 175 रुपया झटक लिये जायेंगे। रोहतक से रिवाड़ी का टोल टैक्स 85 रुपया वसूला जा रहा है। रोहतक-झज्जर रोड़ पर करोथां के पास 25 रुपया टोल टैक्स वसूला जा रहा है तो झज्जर रिवाड़ी रोड़ पर बीकानेर गांव के पास 60 रुपया प्रति कार प्रति फेरा की लुटाई शुरू हो गई है। सबसे ज़्यादा सरकारी लूट रोहतक पानीपत के रोड पर चमारियां गांव के पास 105 रुपया के टोल से शुरू हो गई है। वहीं इसराना के पास ढार गांव के टोल पर 70 रुपया और आप से वसूले जायेंगे तब जाकर आप पानीपत पहुंच पायेगें और अगर पानीपत पार किया तो 30 रुपया वहां फ्लाई ओवर के और देने पड़ जायेंगे। इसके अलावा रोहतक बहादुरगढ़ रोड पर सांपला के पास एक लूट का अड्डा और बनकर तैयार है जहां लगभग 40 रूपया हर चक्कर में आपकी जेब से निकलवा लिये जायेंगे। अगले दो से तीन साल में हिसार और जींद रोड पर भी यही धींगामुरती शुरू हो जायेगी जिनके लिये टेंडर हो चुके हैं।

इसके साथ ही लोग़ों ने मुख्यमंत्री से पूछना शुरू कर दिया है कि जब हमारे पुराने रास्तों पर ही हमें टोल टैक्स देकर चलना पड़ेगा तो तुम विकास का ढोल कैसे बज़ाते फ़िर रहे हो। लोग़ों के रोष को देखकर लगता है कि खुद रोहतक में लोग ही हुड्डा के विकास के ढोल की पोल अगले चुनाव में खोल देंगे और इन्हें चारो खाने चित्त मारेंगे।

सबसे ज़्यादा गुस्से में रोहतक-गोहाना-पानीपत रोड पर रहनेवाले लोग हैं जिन्हें अगर रोहतक अपनी कार से आना जाना है तो एक तरफ़ के 105 रुपया टोल टैक्स देना होगा और वहभी उस रास्ते के जिस पर अपनी पूरी जिंदगी वे फ्री चले हों। और फ़िर मकड़ौली जैसे गांव तो ऐसे हैं जहां से रोहतक आने जाने में कार का तेल तो खर्च होगा 50 रुपये का और टोल टैक्स लगेगा 210 रुपये। इससे गुस्साये लोग़ों ने टोल टैक्स हटाओ संघर्ष समिति बनाकर टोल गेट पर धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया है। दो दिन तक टोल टैक्स की वसूली भी नहीं होने दी। लेकिन फ़िर प्रशासन के हस्तक्षेप व इस आश्वासन के बाद कि 20 कि.मी. तक के गांव से टोल टैक्स नहीं वसूला जायेगा, टोल गेट पर धरना हटा दिया। लेकिन टोल वसूलने वाली कम्पनी ने अगले ही दिन फ़िर स्पष्ट कर दिया कि सिर्फ़ 15 किलोमीटर तक के गांवों के निवासियों को टोल टैक्स से छूट दी जायेगी लेकिन उन्हें 100 रुपया हर महीना देकर एक पास बनवाया होगा। लेकिन मारे तो वो बेचारे रोहतकवासी गये जिनकी इन आसपास के गांवों में रिश्तेदारी है, अब उन्हें हर बार रिश्तेदारी में जाने के लिये 210 रुपया देने होगें या फिर कार से जाने की शान छोड़कर बस से जाना होगा। जो नौकरीपेशा लोग आसपास के गांवों में छोटी-मोटी नौकरी करते हैं उनके लिये भी यह टोल बड़ी परेशानी का सबब बन जाता है क्योंकि वे जिस जीप या तिपहिया से आते-जाते हैं उनसे भी भारी टोल वसूला जा रहा है।

टोल टैक्स वसूलने के पीछे अक्सर यह दलील दी जाती है कि इसके बदले आपको चौड़े और सुविधाजनक रोड भी तो बनाकर दिये जा रहे हैं और दूसरी यह कि पूरे यूरोप और अमेरिका में भी रोडों पर टोल टैक्स वसूला जाता है। इन जनता के दुश्मनों को याद दिला दें कि आज से 400 साल पहले बने जी.टी. रोड पर आवागमन पूरी तरह मुफ़्त था बल्कि बादशाहों द्वारा व्यापारियों के काफ़िलों की सुरक्षा के लिये फ़ौजी टुकड़ियां भी साथ भेजी जाती थी। और जाज हालात यह है कि जगह-जगह टोल तो वसूला जा रहा है पर सुविधा और सुरक्षा की किसी को कोई परवाह नहीं। दूसरी तरफ विदेशों में जिन भी सड़कों पर टोल लगाया गया वे सभी नये बनाये गये थे और उनपर निम्नतम कुछ सुविधाओं और सुरक्षा की गारन्टी दी गई है। यहां तो यह किया जा रहा है कि सैंकड़ों सालों के हमारी फ्री रास्तों को थोड़ा ठीक-ठाक करके 'हुड्डा एंड कम्पनी' मोटा कमीशन खा रही है और उसे विकास बताकर टोल टैक्स के रूप में हमारे से ही उसकी वसूली कर रही है। ठीक ही कहा है कि "तेरा ए चून (आटा) तै तेरा ए पुन्न (पुण्य)"। हमारे ही चून से हमारा पुण्य करके हुड्डा जी फ्री में नाम कमा रहे हैं।

तुर्की-ब-तुर्की

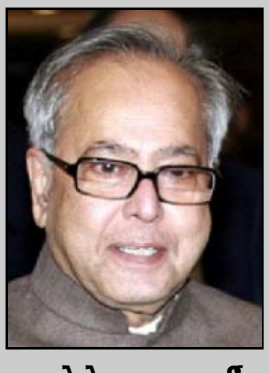

फोटो प्रणव मुखर्जी
(गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा राष्ट्र के नाम संदेश से)

"सरकार कोई खैरात बांटने का निकाय नहीं है"

हमारा कहना है-

- 'आप' सरकार द्वारा दिल्ली में बिजली की दर घटाने पर इतना गुस्सा प्रणव बाबू! वैसे तो दिल्ली सरकार ने भी बिजली कम्पनियों को सब्सिडी देकर ही दरों में कटौती की है। यानी लोग़ों की एक जेब से पैसा निकालकर दूसरी जेब में डाला है। न बिजली कम्पनियों की मुनाफ़ाखोरी कम की गई और न ही बिजली के निजीकरण की नीति को बदला गया है। पर तो भी गरीब तबकों को कुछ राहत तो मिली ही है। इतना श्रेय तो दिल्ली सरकार को देना ही चाहिये।

- सरकारी खैरात बांटने की ओर राष्ट्रपतिजी आपका ध्यान अब ही क्यों गया? जब लाखों करोड़ की सरकारी खैरात टैक्स-छूट देकर व बैंक ऋणों को बट्टे खाते में डालकर इस देश के बड़े-बड़े कार्पोरेटों को दी जाती रही है तो आप जैसों की जबान क्यों नहीं खुलती।

- सरकारी खैरात का फ़ायदा तो आप जैसे सत्ताधारी ही सबसे अधिक उठाते आये हैं। आप जैसों के रख-रखाव व विदेश यात्राओं पर इस देश के मेहनतकशों का हज़ारों करोड़ हर वर्ष जाया होता है। जब से आप राष्ट्रपति बने हैं, राष्ट्रपति भवन के आधुनिकीकरण के नाम पर ही पचासों करोड़ बहाये जा चुके हैं।

- वैसे भी जनता को राहत के नाम पर तमाम कम्पनियों को ही सब्सिडी का उपहार मिलता है। रासायनिक खाद के क्षेत्र में हज़ारों करोड़ की सब्सिडी राजनेताओं व उद्योगपतियों द्वारा दशकों से डकारी जा रही है। अब यही परम्परा बिजली के क्षेत्र में भी शुरु होती दिखाई दे रही है। मुंबई में पूर्व शिवसैनिक और आज कांग्रेसी सांसद संजय निरुपम के बिजली की दरों में कटौती को लेकर चल रहे धरने को आपने निशाना क्यों नहीं बनाया? सभी जानते हैं कि इस धरने का अन्त रिलान्यस के अंबानी की जेबों में मोटी सब्सिडी पहुंचा कर होने जा रहा है।

- उपदेश देना आसान है पर जनता के मतलब से मुद्दों को देखना आप जैसे घाघ शासकों के लिए असंभव है प्रणव बाबू। इससे आप कांग्रेसपति सिद्ध होते हैं पर जन प्रतिनिधि नहीं।

- लगे हाथ आपने यहां तक कह दिया कि 'लोकलुभावन अराजकता' शासन का विकल्प नहीं है। यानी मन्त्रियों को सड़कों पर नहीं उतरना चाहिये और केवल दफ़्तर में बैठकर फ़ाइलें घिसनी चाहिये। सभी जानते हैं कि आप जैसे कांग्रेसी मन्त्रियों ने फ़ाइलें निकालने की फ़ीस तय कर रखी है। लिहाजा उस व्यवस्था में कोई परिवर्तन आपको बरदाश्त क्यों होने लगा। असलियत में आम आदमी की तो फ़ाइलें होती ही नहीं; फ़ाइलों का कारोबार आम आदमी की कीमत पर होता है। प्रणब बाबू, आप इसी व्यवस्था की वकालत तो कर रहे हैं।

- आम आदमी के हक में दिल्ली के मन्त्रियों को सड़क पर उतरना तो आपको इतना नागवार लगा। पर शिवसेना ब्रांड के राजठाकरे (मनसे) के गुंडों का जनहित की आड़ में मुबई की सड़कों पर आये दिन दादागिरी दिखाना आप जैसों को नज़र नहीं आता है। न टोल बैरियरों, जिनके खिलाफ़ मनसे के गुंडे सक्रिय थे, की लूट आप जैसों को नज़र आती है। यानी आपकी चिन्ता के दायरे से गुंडे भी बाहर और लुटेरे भी बाहर।

- और 2.2 डॉलर प्रति यूनिट का करार होने के बावजूद 8.2 डॉलर प्रति यूनिट पर अम्बानी से के.जी. (डी-6) क्षेत्र से गैस खरीद कर आपकी सरकार ने जो 70-80 अरब डॉलर हर साल की खैरात बांट दी है उस पर भी तो कुछ बोलिए प्रणब बाबू!